E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 1 | January 2025

पद्म पुराण में वर्णित पर्यावरणीय विमर्श

सोनाली नरवरे [1], सोनल नरवरे [2]
[1, 2] एम.ए. (इतिहास) बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी

पद्म पुराण : एक परिचय

भारतीय धार्मिक साहित्य में महा पुराणों की संख्या अठारह बताई गई है। इस विषय में एक संग्रहश्लोक मिलता है-

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टय ।
अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि पृथक् पृथक् ।।

अर्थात् 'म' से दो पुराण- मत्स्य तथा मार्कण्डेय,'भ' से दो पुराण भविष्य तथा भागवत्, 'ब्र' से तीन पुराण- ब्रह्म, ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्मवैवर्त, 'व' से चार पुराण- विष्णु, वामन, वराह तथा वायु। पुनः 'अ' से अग्नि, 'ना' से नारद, 'प' से पद्म, 'लिं' से लिङ्ग, 'ग' से गरुङ, 'कू' से कूर्म और स्क' से स्कन्द ये 18 पुराण पृथक् पृथक् हैं।

पदम पुराण से तात्पर्य - भगवान श्रीविष्णु की नाभि से महान् पद्म (कमल) प्रकट हुआ था, जिससे इस जगत् की उत्पति हुई है। उसी के, वृत्तान्त का आश्रय लेकर यह पुराण प्रकट हुआ है, इसलिए इसे पद्मपुराण कहते है। (गीता प्रेस गोरखपुर, सृष्टि खंड, p 3)

पौराणिक साहित्य में हम देखते हैं, कि कई पुराणों के नाम प्राकृतिक घटकों जैसे- अग्नि, वायु, कूर्म अर्थात कछुआ, वराह अर्थात जंगली सुअर, मत्स्य अर्थात मछली, गरुड़ आदि के नाम पर रखे गए हैं। इसी प्रकार इस पुराण का नाम पद्म अर्थात कमल पर रखा गया है। इसका उद्देश्य समाज में पर्यावरण संरक्षण को धर्म की पवित्रता द्वारा स्थापित करना है। (पुराणों में पर्यावरण दर्शन, p 305)

पद्म पुराण में भगवान विष्णु को समुद्र के बीच शेषनाग के शैय्या पर विश्राम करते हुए दिखाया गया है। वहीं गरुड़ को भगवान का वाहन बताया गया है। समुद्र की पुत्री देवी लक्ष्मी को उनकी पत्नी बताया गया है। तुलसी के पौधे (वृंदा) को भी भगवान विष्णु की पत्नी बताया गया है। इसलिए तुलसी को वैष्णवी भी कहा जाता है। भगवान को अन्य कई वृक्षो धात्री (आंवला), अश्वत्थ(पीपल) आदि से भी जोड़कर बताया गया है। इसके अलावा भगवान विष्णु के दस अवतारों के विषय मे भी इस पुराण में चर्चा देखने को मिलती है विष्णु के दस अवतारों में मत्स्य(मछली), कूर्म (कछुआ), वराह (जंगली सूअर), नरसिंह (सिंह मानव रूप में), वामन रूप में राजा बलि के माध्यम से प्रकृति पर नियंत्रण करने की प्रवृत्ति से बचने का संदेश, राम रूप में बंदरों के साथ वन में संयमित जीवन जीने की प्रेरणा तथा कृष्ण गौ पालक के रूप में दिखाई देते है। पदम पुराण में ही भगवान को वायु, वर्षा, तप, धूप आदि के रूप में भी माना गया है। अर्थात भगवान को पर्यावरण के जैविक तत्वों के साथ-साथ भौतिक तत्वों(अजैविक तत्वों) में भी विद्यमान माना गया है। इस प्रकार पर्यावण के जैविक तत्वों एवं अजैविक तत्वों को ईश्वर तत्व से जोड़कर दिखाये जाने की बात सामने आती है, जो पर्यावरण विमर्श एवं संरक्षण को धर्म के माध्यम से लोगों तक पहुँचाने के प्रयास रूप में समझी जा सकती है।

पदम पुराण का रचना काल - पुराण एक विकासशील साहित्य है। वैदिक युग के अनन्तर ही पुराण विद्या का आरम्भ हुआ तथा कालक्रम से इसमें विविध सामग्री जुड़ती गयी। व्यास ने आरम्भ में इस ज्ञान को क्रमबद्ध किया। उन्होंने अपने शिष्य लोमहर्षण को यह ज्ञान दिया। लोमहर्षण की शिष्य परम्परा में यह ज्ञान पल्लवित पुष्पित होता गया। सभी शिष्यों ने मूलगुरू व्यास के नाम पर ही पुराणों में अतिरिक्त सामग्री का संयोजन किया। सभी पुराण संशोधक 'व्यास' के नाम से ही प्रसिद्ध हुए। इस प्रकार 'व्यास' एक नाम नहीं रह कर कथावाचकों, संशोधकों और व्याख्याताओं का पर्याय बनकर विकासात्मक पौराणिक साहित्य के रचयिता के रूप में आया।

पद्म पुराण तथा अभिज्ञान शाकुन्तलम् की शकुन्तला-दुष्यन्त विषयक कथानक समान होने से डॉ. विन्टर नित्स हिस्ट्री आफ इण्डियन लिटरेचर प्रथम भाग पृष्ठ 536-544 में तथा डॉ. हरदत्त शर्मा ' पद्मपुराण एवं कालिदास ' नामक पुस्तक में कालिदास को पद्म पुराण का अधमर्ण स्वीकार करते हैं। अर्थात् कालिदास ने यह कथावस्तु पद्मपुराण से ली है, ऐसा मानते हैं। इस प्रकार कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् पर आश्रित होने से स्वर्ग खण्ड का तथा सम्पूर्ण पद्मपुराण की रचना का काल पञ्चम शती से अर्वाचीन ही मानना उचित होगा। यह प्रचलित पद्मपुराण का निर्माण काल है। मूल पद्म पुराण को इससे भी अधिक प्राचीन होना चाहिये।

पद्म पुराण परिमाण में स्कन्द पुराण को छोड़कर अद्वितीय है। इसके श्लोकों की संख्या 50, 000 बतलायी जाती है। इसके दो संस्करण उपलब्ध होते हैं

(1) बंगाली संस्करण,

(2) देवनागरी संस्करण।

बंगाली संस्करण तो अब तक अप्रकाशित हस्तलिखित प्रतियों में है। जबकि देवनागरी संस्करण आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थावली में चार भागों में प्रकाशित हुआ है।

आनन्दाश्रम संस्करण में छः खण्ड है। (1) आदि (2) भूमि (3) ब्रह्मा (4) पाताल (5) सृष्टि और (6) उत्तरखण्ड। परन्तु भूमिखण्ड के अध्याय 125-48, 49 से पता चलता है कि मूल में पांच ही खण्ड है। जो बंगाली संस्करण में उपलब्ध हैं।

प्रथमं सृष्टिखण्डं हि भूमिखण्डं द्वितीयकम् ।
तृतीयं स्वर्गखण्डञ्च पातालञ्च चतुर्थकम् ।।
पंचमं चोत्तरं खण्डं सर्वपाप प्रणाशनम्।

इस प्रकार उक्त खण्डों के आधार पर संक्षेप में ग्रन्थ का परिचय प्रस्तुत है -

(1) सृष्टि खण्ड :- इसमें 82 अध्याय हैं तथा 5500 श्लोक हैं। यह खण्ड पांच पर्वो में विभक्त है।

- पुष्कर पर्व इसमें देवता, मुनि, पितर, मनुष्य आदि की सृष्टि का वर्णन है।
- तीर्थपर्व- इसमें पर्वत, द्वीप तथा सप्तसागर का वर्णन है।
- तृतीय पर्व में अधिक दक्षिणा दान शील राजाओं का चरित वर्णित है।
- राजाओं का वंशानुकीर्तिन है।
- मोक्ष पर्व में मोक्ष तथा उसके साधन का वर्णन किया गया है। इस सृष्टि खण्ड में समुद्र मंथन, पृथु की उत्पत्ति, पुष्करतीर्थ के निवासियों का धर्मकथन, वृत्रासुर संग्राम, वामनावतार, मार्कण्डेय की उत्पत्ति, कार्तिकेय की उत्पत्ति, रामचरित, तारकासुर बध आदि की कथायें सविस्तार वर्णित है।

(2) भूमि खण्ड : इस खण्ड में शिवकर्मा नामक ब्राह्मण की पितृभक्ति के द्वारा स्वर्गलोक की प्राप्ति का वर्णन, राजा पृथु का चरित, राजा बेन का उन्मार्गगामी होना, सप्तषियों द्वारा वेनबादु मंथन सविस्तार प्रतिपादित है। नाना प्रकार के नैमित्तिक तथा आभ्युदयिक दोनों के अनन्तर सती सुकला की पतिव्रत कथा, ययाति तथा मातलि के अध्यात्म विषयक सम्वाद में पाप और पुण्य के फलों का वर्णन और विष्णु भक्ति की प्रशंसा की गयी है।

(3) स्वर्ग खण्ड :- इस खण्ड में देवता, गन्धर्व, अप्सरा, यक्ष आदि के लोकों का विस्तृत वर्णन है। इसी खण्ड में शकुन्तलोपाख्यान है। जो महाभारत के आख्यान से सर्वथा भिन्न है। परन्तु शाकुन्तलम् से मिलता है।

(4) पाताल खण्ड: इसमें नागलोक का विशेष रूप से वर्णन किया गया है। प्रसंगतः रावण का उल्लेख होने पर सम्पूर्ण रामायण का वर्णन किया गया है। सीता परित्याग, अश्वमेघ यज्ञ आदि की कथायें भी इस खण्ड में वर्णित है। व्यास द्वारा अष्टादश पुराणों की रचना का उल्लेख तथा भागवत की विशेष महिमा का वर्णन भी इस खण्ड का मुख्य अंश है।

(5) उत्तर खण्ड: इस खण्ड में विविध आख्यानों का संग्रह है। इसमें विष्णु भक्ति की विशेष प्रशंसा की गयी है। क्रियायोग सार नामक इसका एक परिशिष्ट अंश भी है। जिसमें यह दिखलाया गया है विष्णु की पूजन, व्रत तथा तीर्थों के सेवन से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं। (इतिहास पुराणों का परिचय, p 22-23)

प्राचीन भारत में पर्यावरण विमर्श का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

पर्यावरण संरक्षण संबंधित अनेक बाते हमें काफी समय पहले लगभग सिंधु घाटी सभ्यता से ही दिखाई देने लगता है। उदाहरण स्वरूप सिंधु घाटी सभ्यता के मृदभाण्डों पर पीपल, नीम, खजूर, बबूल आदि वृक्षों का अंकन मिलता है, जो उनके प्रकृति प्रेम को प्रकट करता है। ना केवल पेड़ पौधे के प्रति लगाव बल्कि एक श्रृंगी बैल का मुहर पर अंकन व फाख्ता नामक पक्षी प्रेमी होना उनके जीवो के प्रति अटूट प्रेम को दर्शाता है। जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण तथा वायु प्रदूषण को रोकने के उपाय के रूप में गंदे पानी की निकासी नालियों का व्यवस्थित रूप में ढका हुआ होना पर्यावरण संरक्षण को भी दिखाता है। (सिंधु घाटी सभ्यता के परिपेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण, p 132-133)

सिंधु घाटी सभ्यता के पश्चात जब हम वैदिक काल के साहित्यक स्त्रोतों का गहन अध्ययन करते है तो हम पाते है कि तत्कालीन समय मे पर्यावरणीय चिंतन का स्वरूप विस्तृत हो गया है। जैसे ऋग्वेद के एक महत्त्वपूर्ण मंत्र में कहा गया है कि परमात्मा ने मनुष्य को बहुत उपहार दिए हैं। उनमें से एक पृथिवी है। इसमें अक्षय धन का भंडार है। इस अक्षय भंडार की रक्षा द्युलोक, वृक्ष-वनस्पतियाँ, जल, नदियाँ, वन और जल के स्रोत करते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि पृथिवी के अन्दर जो रत्न, मणि, खनिज, पेट्रोल, कोयला, तेल आदि पदार्थ हैं, उनकी सुरक्षा के लिए ये वृक्ष-वनस्पतियाँ आदि पदार्थ हैं। यदि हम इन रक्षक तत्त्वों को नष्ट करते हैं तो भूमि के अन्दर विद्यमान खनिजों आदि पर कुप्रभाव पड़ेगा-

पूर्वीरस्य निष्षिधो मर्त्येषु
पूरू वसूनि पृथिवी बिभर्ति ।
इन्द्राय द्याव ओषधीरुतापो
रयिं रक्षन्ति जीरयो वनानि । ।
ऋग्० 3.51.5

अथर्ववेद के एक मंत्र में पर्यावरण की शुद्धि का महत्त्व वर्णन करते हुए कहा गया है कि जहाँ पर्यावरण शुद्ध रहता है, वहाँ मनुष्य, पशु-पक्षी आदि सभी सुखपूर्वक जीवित रहते हैं। मंत्र में पर्यावरण के लिए परिधि शब्द और पूर्ण शुद्धि के लिए ब्रह्म शब्द हैं -

सर्वो वै तत्र जीवति गौरश्वः पुरुषः पशुः ।
यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जीवनाय कम् ।। अथर्व० 8.2.25.

ऋग्वेद के एक मंत्र में, ऋषियों ने वृक्षों को परमात्मा के विभिन्न गुणों का प्रतीक माना है। ऋग्वेद का यह पूरा स्त्रोत, वृक्षों की, मुख्यतया उनकी रोगमुक्त करने की विशेषताओं की प्रशंसा में रचा गया है। सबसे बढ़कर, यज्ञ सम्बन्धी उपकरणों को देवता कहा गया है (ऋग्वेद-10.97)।

ऋग्वेद के पूरे नौवें मण्डल के छह स्त्रोत सोमवृक्ष, जो कि एक वनस्पति है की प्रशंसा में समर्पित हैं। ऋग्वेद में वर्णित अन्य वृक्ष शाल्मली या सॅमल, खदीरा, सिंपस और विभदक हैं। अथर्ववेद तथा बाद की दूसरी संहिताओं में दो अन्य महत्वपूर्ण वृक्ष शमी और पलाक्ष का भी उल्लेख मिलता है। इक्षु अथवा ईख भी वैदिक युग में उगाया जाता था। फूल धारण करने वाले वृक्षों में पवन या पलाश, कमल व कुमुद और फल धारण करने वाले वृक्षों में उर्वरूक, कर्कन्दु, कुवल, उडुंबर, खजूर तथा बिल्व का उल्लेख ऋग्वेद और अथर्ववेद में मिलता है। (लोक साहित्य में पर्यावरण चेतना, p 19)

वेदों के पश्चात आये ब्राह्मणों, उपनिषदों, आरण्यकों, स्मृतियों एवं महाकाव्यों में भी पर्यावरणीय विमर्श महत्वपूर्ण रूप में दिखाई देता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में वायु को विशेष महत्व दिया गया है, वायु को शुद्ध करने (प्रदूषण मुक्त) के लिए यज्ञ में औषधियों की हवि की आहुति देने की बात कही गई है। शतपथ ब्राह्मण एक मंत्र में इस विषय में बताया गया है-

ओषं ध्येति तरूः ओषधयः सम्भवन्।

(शतपथ ब्राह्मण 2.2.4.5)

उपनिषद्-काल के ऋषियों ने वनस्पतियों में परमात्मा के अस्तित्त्व के भी दर्शन किये हैं। वे कहते हैं- जो परमात्मा इस बृह्माण्ड, जल व अग्नि में व्याप्त हैं, वही वृक्षों और औषधियों में भी निवास करता है। जैसे- काथक उपनिषद् सम्पूर्ण संसार को एक अश्वत्थ वृक्ष मानता है। (लोक साहित्य में पर्यावरण चेतना आर्टिकल, page 20) इसी प्रकार लगभग 600 ई०पू० से 500 ई० तक में लिखे गये पुराण साहित्य में भी पर्यावरणीय विमर्श विशेष रूप से दिखाई देता है। (छान्दोग्योपनिषद् (7/1/2) में इतिहास तथा पुराण को संयुक्त रूप से नारद ने पञ्चम वेद कहा हैं-

इतिहास पुराणं पञ्चमं वेदानां वेदम्।

मनु स्मृति और याज्ञवल्क स्मृति दोनो में ही हरे वृक्षों और पौधों को काटने वाले को दण्ड देने की बात कही है। मनुस्मृति में निर्देश दिया गया है कि गांव की सीमा पर तालाब या कुआँ, बावड़ी, झरना में से कुछ न कुछ अवश्य बनवाने चाहिए और साथ ही वट, पीपल, नीम, सेमल, साल, ताल एवं दूध वाले वृक्ष भी लगाने चाहिए। (प्राचीन भारतीय धर्मग्रंथों में पर्यावरण चेतना: एक ऐतिहासिक अध्ययन, p 108)

रामायण में वन, पशु-पक्षी, वनस्पति, नदी, तालाब, झील एवं पहाड़ आदि के विषय मे वर्णित किया गया है। महाभारत के वन, उद्योग, शांति, अनुशासन भीष्म जैसे पर्वो में पर्यावरण की बात की गई है। महाभारत के उद्योग पर्व में विदुर नीति के माध्यम से यह उपदेश दिया गया है, कि जिस प्रकार भोरे फूलों को बिना कोई नुकसान पहुचाये अपना भोजन प्राप्त कर लेते है उसी प्रकार का व्यवहार मानव को प्रकृति के साथ करने की बात कही है अर्थात मानव प्रकृति को कोई क्षति भी ना पहुँचाये और अपनी जरूरत भी पूरी कर ले - यथा गधु रागादत्ते रक्षन्पुष्पाणि षद्दः ।

तद्वदर्थान् मनुष्येभ्य आदघादविहिंसया।।
पुष्पं पुष्पं विचिन्वीत मूलच्छेदं न कारयेत्।
मालाकार इवारामे न यथाङ्गुकारकः ।।

(महा./ उद्यो. प./ 34/ 16-18) (महाभारत में पर्यावरण संरक्षण, p 61),

पुराणों का विकास दो रूपों में हुआ है- महापुराण तथा उपपुराण। महापुराण प्राचीनतर हैं जिनकी संख्या अठारह है। पुराणों को व्यास के द्वारा रचित माना गया है। सभी पुराणों में पर्यावरण संरक्षण की भावना मुख्य रूप में परिलक्षित होती है। अग्निपुराण में विभिन्न प्रकार के पक्षियों एवं पशुओं के विषय मे जानकारी प्राप्त होती है, वही स्कंद पुराण और पदम पुराण में वर्णित समुद्र मंथन की कथा प्रकृति को देवताओं से भी उच्च स्थान पर दर्शाती है क्योंकि प्रकृति की सहायता (जैसे भगवान विष्णु कछुआ रूप में,समुद्र , मंदरांचल पर्वत , वासुकी नाग आदि के सहयोग के फलस्वरूप) से ही देवताओं को अमृत प्राप्त हुआ था। अर्थात प्रकृति को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। इसी प्रकार स्कंद पुराण, मत्स्य पुराण, विष्णु पुराण, वायुपुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, श्रीमद्भागवत पुराण, शिव पुराण, विष्णु धर्मोत्तर पुराण,आदि अन्य पुराणों में भी धार्मिक निर्देशन के माध्यम से पर्यावरण चिंतन व्यापक रूप में दिखाई देता है। इस प्रकार प्राचीन भारत के साहित्यिक स्तोत्रों प्राचीन भारत में पर्यावरण चेतना को विशेष रूप से दर्शाते है।

पदम पुराण में वर्णित जैविक घटक

पर्यावरण का अर्थ : पर्यावरण शब्द परि+आवरण से बना है। इसका अर्थ है- हमारे चारों तरफ का वातावरण जिससे हम ढके हुए हैं। पर्यावरण वह परिवृति है जो मानव को चारों ओर से घेरे हुए है तथा उसके जीवन और क्रियाओं पर

प्रभाव डालती है। इसमें मनुष्य के बाहर के समस्त घटक, वस्तुएँ, स्थितियाँ तथा दशाएँ सम्मिलित हैं, जो मानव के जीवन को प्रभावित करती हैं। (वेदों में विज्ञान, p 242)

अन्य शब्दों में पर्यावरण उन सभी जैविक(Biotic) एवं अजैविक (Abiotic) घटकों का जटिल युग्म है। जिनसे मानव घिरा हुआ है। इस प्रकार पर्यावरण दो प्रकार के घटकों से मिलकर बना हुआ है- जैविक(सजीव) एवं अजैविक(निर्जीव) घटक।

1.जैविक घटक :- जैविक घटकों के अंतर्गत समस्त जीव जगत(जैसे-जंतुओं, पक्षियों, कीड़े-मकोड़े एवं सूक्ष्म जीवी आदि) एवं सभी प्रकार के पेड़-पौधे को शामिल किया जाता है।

2. अजैविक घटक :- अजैविक घटकों में वायुमंडल, जलमंडल एवं स्थलमंडल के सभी निर्जीव भौतिक एवं रासायनिक तत्वों को सम्मिलित किया जाता है। प्रकाश, वायु, मिट्टी, जल, पर्वत, खनिज पदार्थ, नदी, रेत, ताप, तालाब, झरनें, समुद्र, पर्वत इत्यादि अजैविक घटक के उदाहरण है। (वेदों में विज्ञान, p 242)

पदम पुराण में पर्यावरण के जैविक तत्व जैसे- वन्य-जीव जंतु, कीड़े मकोड़े, मानव, पेड़-पौधों का तीन आधार पर वर्णन मिलता है-

(i) पर्यावरण का संरक्षण एवं संवर्धन :- पद्म पुराण में पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन पर विशेष बल दिया गया है। इस विषय मे हमें कई उदाहरण देखने को मिलते है-

जिसने श्रीभगवान्‌की पूजाके लिये पृथ्वी पर तुलसीका बगीचा लगा रखा है, उसने उत्तम दक्षिणाओं से युक्त सौ यज्ञोंका विधिवत् अनुष्ठान पूर्ण कर लिया है। इसके अलावा श्री कृष्ण द्वारा गोमती तट पर, भगवान राम द्वारा सरयु तट पर, माता सीता द्वारा अशोक वाटिका में, हिमालय पर्वत पर पार्वती जी द्वारा, दंडकारण्य में लक्ष्मण द्वारा इस पौधे को रोपे व उसे पाले-पोसे जाने का वर्णन मिलता है। इस प्रकार तुलसी के पौधे के संरक्षण व संवर्धन की बात सामने आती है।

पदम पुराण में केवल तुलसी के पौधे को रोपने के विषय मे ही नही कहा गया है बल्कि अन्य वृक्षो को लगाने की बात पर भी जोर दिया गया है तथा उससे होने वाले लाभों को बताया गया है-

भीष्म एवं पुलस्त्य संवाद के प्रसंग के अंतर्गत वृक्षारोपण उत्सव की बात बताई गई है " हे भीष्म! पीपल के वृक्ष लगाओ। वह अकेला ही तुम्हें एक हजार पुत्रोंका फल देगा। पीपल(अश्वत्थ) का पेड़ लगाने से मनुष्य धनी होता है। अशोक शोक का नाश करने वाला है। पाकड़ को विष्णु स्वरूप बताया गया है, यह यज्ञ का फल देनेवाला बताया गया है। नीम का वृक्ष आयु प्रदान करने वाला माना गया है। जामुन कन्या देनेवाला कहा गया है। अनार का वृक्ष पत्नी प्रदान करता है।

पीपल(अश्वत्थ) रोग का नाशक और पलाश ब्रह्मतेज प्रदान करनेवाला है। अङ्कोल लगाने से वंश की वृद्धि होती है। खैर का वृक्ष लगाने से आरोग्य की प्राप्ति होती है। नीम लगाने वालों पर भगवान् सूर्य प्रसन्न होते हैं। बेल के वृक्ष में भगवान् शङ्करका और गुलाबके पेड़ में देवी पार्वतीका निवास है। अशोक वृक्ष में अप्सराएँ और कुन्द (मोगरे) के पेड़ में श्रेष्ठ गन्धर्व निवास करते हैं। बेंत का वृक्ष लुटेरोंको भय प्रदान करनेवाला है। चन्दन और कटहल के वृक्ष क्रमशः पुण्य और लक्ष्मी देनेवाले हैं। चम्पाका वृक्ष सौभाग्य प्रदान करता है। मौलसिरीसे कुलकी वृद्धि होती है। नारियल वृक्ष में भगवान शंकर का वास बताया गया है तथा इसे लगाने वाला सौभाग्य प्राप्ति करने वाला बताया गया है। दाखका पेड़ सर्वाङ्गसुन्दरी स्त्री प्रदान करनेवाला है। केवड़ा शत्रुका नाश करनेवाला है। जहाँ आँवले(धात्री) का वृक्ष मौजूद होता है, वहाँ भगवान् श्रीविष्णु सदा विराजमान रहते हैं तथा उस घर में ब्रह्मा एवं सुस्थिर लक्ष्मीका भी वास होता है। इसलिये अपने घरमें आँवला अवश्य रखना चाहिये। रुद्राक्ष के वृक्ष को महान वृक्ष बताया गया है।

इसी प्रकार अन्यान्य वृक्ष भी जिनका यहाँ नाम नहीं लिया गया है, यथायोग्य फल प्रदान करते हैं। जो लोग वृक्ष लगाते हैं, उन्हें [परलोक में] प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

वृक्षारोपण के समय पौधों को सर्वोषधिमिश्रित जल से सींचा जाता था। वृक्षों को निरोग करना भी एक धार्मिक कृत्य माना गया था।" (पद्मपुराण, सृष्टि खण्ड 28.4) (p 89) अर्थात पेड़ो के संवर्धन की बात कही गई है।

पवित्र वृक्षो को तथा गौचर भूमि का उच्छेद(हटाने का कार्य) करने वालो की 21 पीढ़ी को रौरव नरक में पकाये जाने की बात भी यह पुराण करता है। अर्थात नरक का डर दिखा कर पेड़ों को बचाने का संदेश भी दिया गया है।

इस पुराण में भगवान को जीव जंतुओं का रक्षक बताया गया है- "ग्राह(मकर) से युद्ध करते समय आपत्ति में पड़े हुए गजराज (हाथी) की भगवान श्री हरि ने मदद की थी"

(ii)ईश्वरीय तत्व :- पदम पुराण में पर्यावरण के कुछ जैविक घटको को ईश्वर के समान बताया गया है। जैसे- तुलसी के पौधें को भगवान विष्णु की पत्नी रूप में वैष्णवी नाम से सम्मानित किया गया है, वही अश्वत्थ व पाकर वृक्ष को भगवान विष्णु के समान माना गया है। पेड़ो, वनस्पतियों, पक्षियों, मानव व जन्तुओ की प्रजातियों के विषय मे एक कथा मिलती है, जो इन्हें कश्यप ऋषि की संतान के रूप में बताती है- ताम्रा ने कश्यप जी के वीर्य से 6 कन्याओं को जन्म दिया।जिनके नाम है- शुकी, श्येनी, भासी, सुग्रध्री, - गृधिका तथा शुचि ।

शुकी ने शुक तथा उल्लू नामवाले पक्षियों की उत्पन्न किया। श्येनी ने श्येनों (बाजों) को तथा भासी ने कुरर नामक पक्षियों की जन्म दिया। गृध्री से गृध्र तथा सुगृध्री से कबूतर उत्पन्न हुए तथा शुचि ने हंस सारस, कारण्ड तथा प्लव नामक पक्षियों को जन्म दिया।

"पक्षियों में श्रेष्ठ गरुड़ व अरूण विनता के पुत्र है। (पेज 18, ईश्वर तत्व) सुरसा के गर्भ से 1 हजार सर्पों की उत्पति । कद्रू ने 1000 मस्तक वाले नागों को जन्म दिया। सुरभि ने गाय, भैंस, रुद्रगण व सुन्दर रित्रयों को जन्म दिया। मुनि से मुनियों का समुदाय तथा अप्सरायें प्रकट हुई । अरिष्टा ने बहुत से किन्नरो तथा गन्धर्वो को जन्म दिया। इरा से तृण, वृक्ष, लताएं तथा झाड़ियों - इन सबकी उत्पत्ति हुई। अर्थात इन जैविक तत्वों को ईश्वर अंश बताया गया है। वही भगवान श्रीविष्णु के दस अवतारों में मछली,कूर्म (कछुआ), वराह(सुअर), नृसिंह तथा बौने के रूप में जन्म लेकर त्रिविक्रम रूप में पृथ्वी की रक्षा, राम के रूप में वह बन्दरों के साथ घनिष्ट रूप से जुड़ना और कृष्ण के रूप में वह हमेशा गायों से घिरे रहना भी प्रकृति के तत्वों के ईश्वरीय रूप में सम्मान को दर्शाता है। तथा भगवान की कृपा उनके प्राणियों को मारकर या उनकी रचना को नुकसान पहुंचाकर प्राप्त नही की जा सकती को बताता है।

(iii) प्रकृति का शोषण: शिकार एवं वनोन्मूलन के रूप में :- इस पुराण में वनोन्मूलन का उदाहरण नही मिलता है। किन्तु इस पुराण में शिकार के दो उदाहरण देखने को मिलते है राजा प्रभंजन द्वारा मृगों के शिकार के समय एक माँ हरणी का शिकार करने व उस हरणी द्वारा राजा को श्राप देने के परिणाम स्वरूप राजा का व्याघ्र(बाघ) योनि में जन्म लेना। इस कथा के द्वारा शिकार खेलने को गलत कर्म के रूप में बताया है वही एक अन्य कथा द्वारा महाराज इक्ष्वाकु द्वारा गङ्गाके तटवर्ती वन में बहुत-से सिंहों और शूकरों के शिकार को साहस के परिचय के रूप में बताया गया है, इस प्रकार पद्मपुराण में शिकार पर मिश्रित राय दिखाई देती है।

पद्म पुराण में वर्णित अजैविक तत्व

पद्म पुराण में पर्यावरण के अजैविक तत्वों के रूप में समुद्र, नदियां, पर्वत, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, वायु(हवा), जल, मिट्टी, आकाश, पृथ्वी(ग्रह) आदि का विवरण मिलता है।

पदम पुराण में वर्णित सभी अजैविक तत्वों का वर्णन तीन आधारों पर किया गया है-

(i) पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन :- पद्म पुराण के 42 वें अध्याय में तालाब खुदवाने, वृक्ष लगाने, गोचर भूमि निर्माण के विषय में विस्तृत रूप से दिया हुआ है। इसमें कहा गया है कि तालाब खुदवाने वाले मनुष्य सहस्त्रों वर्षों तक स्वर्ग में सुख पूर्वक रहते हैं इसके अलावा जल को भी अत्यंत पवित्र बताया गया है। जल का दान ही सर्वश्रेष्ठ है, इसलिए बावलियों,कुओं एवं पोखरों को बनवाना चाहिये। साथ ही इसमें बताया गया है कि जिन्होंने बावली, कुआँ, सरोवर, पौसला, धर्मशाला और बगीचे बनवाये हैं। उन मनुष्यो को स्वर्ग की प्राप्ति होती है, जिस पोखर में केवल वर्षाकालमें

ही जल रहता है, वह सौ अग्निष्टोम यज्ञोंके बराबर फल देनेवाला होता है। जिसमें शरत्कालतक जल रहता हो, उसका भी यही फल हैं। हेमन्त और शिशिरकालतक रहनेवाला जल क्रमशः वाजपेय और अतिरात्र नामक यज्ञका फल देता है। वसन्तकालतक टिकनेवाले जलको अश्वमेध यज्ञके समान फलदायक बतलाया गया है तथा जो जल ग्रीष्म- कालतक मौजूद रहता है, वह राजसूय यज्ञसे भी अधिक फल देनेवाला होता है। मत्स्यपुराण के समान पदमपुराण में भी कहा गया है- जो विज्ञ पुरुष ऐसे गाँवमें जहाँ जलका अभाव हो, कुआँ बनवाता है, वह उसके जलकी जितनी बूँदें हों उतने वर्षतक स्वर्गमें निवास करता है। दस कुओंके समान एक बावली, दस बावलियोंके समान एक सरोवर, दस सरोवरोंके समान एक कन्या और दस कन्याओंके समान एक वृक्ष लगानेका फल होता है। यह शुभ मर्यादा नियत है। यह लोकको उन्नतिके पथपर ले जानेवाली है। इस प्रकार नदियों, तालाबो, पोखरों, छोटे जलाशयों के संरक्षण व संवर्धन की बात कही गई है।

पर्वत पर, नदी के तट में, विल्बपत्र वृक्ष के नीचे, जलाशय में तथा समुद्र के किनारे, वल्मीक पर तथा विशेष रूप से श्रीहरि के क्षेत्र में,जहाँ पर श्रीभगवान् के स्नान का जल नित्य गिराया जाता आदि जगहों से ऊर्ध्व-पुण्ड्रो(तिलक) को धारण करने के लिए मिट्टी लेनी चाहिए। चूंकि उर्ध्व पुण्ड्रो अस्वच्छ मिट्टी से धारण नही किया जा सकता। इस प्रकार मिट्टी को स्वच्छ रखने एवं संरक्षित रखने के विषय मे भी ये पुराण कहता है।

(ii) ईश्वरीय तत्व:- पद्म पुराण में पंच महाभूतों(पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) का वर्णन व्यापक रूप में मिलता है। इसमें बताया गया है कि आकाश से वायु का प्राकट्य हुआ, वायु से अग्नि प्रकट हुई, अग्नि से जल की उत्पत्ति हुई, जल से पृथ्वी उत्पन्न हुई। इस प्रकार सृष्टि की उत्पत्ति इन पांच महाभूतों से मानी गई है।

ऋग्वेद संहिता में एक मंत्र दिया गया है-

हिरण्यगर्भः समवर्ततााग्रे (ऋग्वेद, 10/121/1)

जिसका अर्थ है, सर्वप्रथम जीवों का स्वामीभूत हिरण्यगर्भ अस्तित्व में आया और उसी से सृष्टि का निर्माण हुआ।

इसी प्रकार का समान विवरण पदम पुराण के सृष्टि खंड से भी प्राप्त होता है- आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वी- ये क्रमशः शब्दादि उत्तरोत्तर गुणोंसे युक्त हैं। ये पाँचों भूत पृथक् पृथक् नाना प्रकारकी शक्तियोंसे सम्पन्न हैं, किन्तु परस्पर संघटित हुए बिना वे प्रजाकी सृष्टि करनेमें समर्थ न हुए। इसलिये महत्त्व से लेकर पञ्चभूतपर्यन्त सभी तत्त्व परम पुरुष परमात्मा द्वारा अधिष्ठित और प्रधानद्वारा अनुगृहीत होने के कारण पूर्णरूप से एकत्वको प्राप्त हुए। इस प्रकार एक-दूसरेसे संयुक्त होकर परस्परका आश्रय ले उन्होंने अण्ड की उत्पत्ति की। महाप्राज्ञ महर्षियो! इस तरह भूतोंसे प्रकट हो क्रमशः वृद्धिको प्राप्त हुआ वह विशाल अण्ड पानीके बुलबुलेकी तरह सब ओरसे समान - गोलाकार दिखायी देने लगा। वह पानीके ऊपर स्थित होकर ब्रह्मा (हिरण्यगर्भ) के रूपमें प्रकट हुए भगवान् विष्णुका उत्तम स्थान बन गया।

सम्पूर्ण विश्वके स्वामी अव्यक्त स्वरूप भगवान् विष्णु स्वयं ही ब्रह्माजीका रूप धारण कर उस अण्डके भीतर विराजमान हुए। उस समय मेरु पर्वतने उन महात्मा हिरण्यगर्भके लिये गर्भको ढकनेवाली झिल्लीका काम दिया, अन्य पर्वत जरायु- जेरके स्थानमें थे और समुद्र उसके भीतरका जल था। उस अण्डमें ही पर्वत और द्वीप आदिके सहित समुद्र, ग्रहों और ताराओंके साथ सम्पूर्ण लोक तथा देवता, असुर और मनुष्योंसहित सारी सृष्टि प्रकट हुई। आदि-अन्तरहित सनातन भगवान् विष्णुकी नाभिसे जो कमल प्रकट हुआ था, वही उनकी इच्छासे सुवर्णमय अण्ड हो गया। परमपुरुष भगवान् श्रीहरि स्वयं ही रजोगुणका आश्रय ले ब्रह्माजीके रूपमें प्रकट होकर संसारकी सृष्टिमें प्रवृत्त होते हैं। वे परमात्मा नारायणदेव ही सृष्टिके समय ब्रह्मा होकर समस्त जगत्की रचना करते है, वे ही पालनकी इच्छासे श्रीराम आदिके रूपमें प्रकट हो इसकी रक्षामें तत्पर रहते हैं, जब ब्रह्मा की आयु समाप्त हो जाती है, तब काल सम्पूर्ण प्राणियों के शरीर की आयु पूरी हुई जान जगत का संहार करनेके लिये महाप्रलय आरम्भ करता है।

योग-शक्ति-सम्पन्न सर्वरूप भगवान् नारायण सूर्यरूप होकर अपनी प्रचण्ड किरणोंसे समुद्रोंको सोख लेते हैं। तदनन्तर श्रीहरि बलवान् वायुका रूप धारण कर सारे जगत्को कँपाते हुए प्राण, अपान और समान आदिके द्वारा आक्रमण

करते हैं। घ्राणेन्द्रियका विषय, घ्राणेन्द्रिय तथा पार्थिव शरीर- ये गुण पृथ्वीमें समा जाते हैं। रसनेन्द्रिय, उसका विषय रस और स्नेह आदि जलके गुण जलमें लीन हो जाते हैं। नेत्रेन्द्रिय, उसका विषय रूप और मन्दता, पटुता आदि नेत्रके गुण- ये अग्नि-तत्त्वमें प्रवेश कर जाते हैं। वागिन्द्रिय और उसका विषय, स्पर्श और चेष्टा आदि वायुके गुण- ये वायुमें समा जाते हैं। श्रवणेन्द्रिय और उसका विषय शब्द तथा सुननेकी क्रिया आदि गुण आकाशमें विलीन हो जाते हैं। इस प्रकार कालरूप भगवान् एक ही मुहूर्तमें सम्पूर्ण लोकोंकी जीवनयात्रा नष्ट कर देते हैं पंच महाभूत भी ब्रह्म में प्रवेश कर जाते है। इसप्रकार भगवान विष्णु ही सृष्टि को उत्पन्न करते है, वे सृष्टि के प्रत्येक तत्व में विधमान है और स्वयं ही समय आने पर सृष्टि को नष्ट करते है। अतः भगवान की कृपा उनके प्राणियों को मारकर या उनकी रचना को नुकसान पहुंचाकर प्राप्त नही की जा सकती है। पदम पुराण में अन्य कई उदाहरण भी इसी बात की पुष्टि करते है -

प्रचण्ड आँधी,वायु, अत्यन्त शीत, अधिक वर्षा और दुःसह ताप देने वाली धूप इन सबके रूप में भगवान् का साक्षात्कार हो रहा है, अर्थात ये जो सब-के-सब है, वह भगवान् श्री विष्णु के ही स्वरूप हैं।

सूर्य, चन्द्रमा, वायु, पृथ्वी, जल, आकाश, दिशाएँ, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र तथा सम्पूर्ण प्राणी उस परमेश्वरके ही स्वरूप हैं, भूमिखंड में भी सुव्रत कथा मे भगवान श्री नारायण के नरसिंह अवतार को आकाश में, पृथ्वी पर, पर्वतोंमें, वनोंमें, जल, थल और पाषाण में तथा सम्पूर्ण जीवोंके भीतर व्याप्त दिखाया गया है इसी प्रकार श्री केशव को तृण, काष्ठ, पत्थर तथा सूखे और गीले सभी पदार्थों में उपस्थित बताया गया है । इस पर्यावरण के प्रत्येक जड़ एवं चेतन तत्व में ईश्वर को बताया गया है।

भगवान विष्णु का वराह अवतार के समय- पृथ्वी (ग्रह रूप में) ने स्वयं को विष्णु (माधव) द्वारा सृजित किये जाने के कारण माधवी कहा है। (पदमपुराण p 8)

सभी तीर्थों में मैं ही देवता हूँ। (ईश्वर तत्व)

पृथ्वी पर मानसरोवर, गंगा, नर्मदा, सरस्वती, यमुना, तापी (ताप्ती), चर्मण्वती, सरयू, घाघरा,वेणा, कावेरी, कपिला, विशाला, गोदावरी, भीमरथी,वेदिका, कृष्णगङ्गा और तुङ्गभद्रा आदि नदियों को पवित्र व इनके तटों को पावन तीर्थ बताया गया हैं, तथा जितनी भी अन्य छोटी-छोटी नदियाँ हैं, उनमें भी तीर्थ प्रतिष्ठित माना गया है। जितने भी खोदे हुए जलाशय हैं, उनमें तीर्थ की प्रतिष्ठा है। भूतलपर जो मेरु आदि पर्वत है, वे भी तीर्थरूप हैं। जहाँ पवित्र बगीचे हों, जहाँ पीपल,पाकर, बरगद तथा अन्य जंगली वृक्षों का समुदाय हो, उन सब स्थानों को तीर्थ बताया गया है।

(iii) पर्यावरण प्रदूषण :- नदियों और समुद्रके किनारे, वृक्षकी जड़ के पास, बगीचेमें, फुलवारी , गोशाला तथा साफ-सुथरी सुन्दर सड़कों तथा जल को स्वच्छ रखने की बात कही गई है। इसके अलावा इस पुराण में यज्ञ(हवी के रूप में औषधीयो का प्रयोग) को मनोकामना पूर्ण करने वाले ना बताकर, उन्हें पर्यावरण शुद्धि(प्रदूषण मुक्त) हेतु किये किए गए उपाय के रूप में भी बताया गया है-

यज्ञेनप्यायिता देवा वृष्ट्युत्सर्गेण मानवाः।
आप्यायन वै कुर्वीतिं यज्ञाः कल्याणहेतवः ।।
(पदम पुराण, सृष्टि खंड 3/124)

अर्थात सभी प्रकार के यज्ञ केवल ईश्वर प्रसन्नता के लिए नहीं होते, वरन् इन यज्ञों में प्रकृति को सुरक्षित करने वाले तत्व भी मौजूद होते है। अर्थात पर्यावरण को प्रदुषण मुक्त रखने की बात की गई है।

उपसंहार

भारत जैसे देश के पर्यावरणीय ज्ञान को आम जनमानस तक पहुँचाने के लिए धार्मिक सहित्य सशक्त माध्यम रहा है। क्योंकि ये देखा गया है कि भारतीय लोग अपने जीवन में धर्म को सर्वप्रथम स्थान पर रखते है चूंकि धर्म मानव को नैतिक नियमों व आचरणों का एक ऐसा सेट प्रदान करता है जिससे मनुष्य ऐसा जीवन जिये की जिससे कि पर्यावरण को कोई नुकसान भी ना पहुंचे और मानव की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो जाएं।

पदम पुराण के सृष्टि खंड में दो प्रकार की भक्ति-सांख्यज एवं योगज के विषय मे बताया गया है। सांख्यज भक्ति में प्रकृति एवं मानव(प्रकृति के भोगकर्ता) को ठीक ठाक जानना अर्थात पर्यावरण को जानने की बात कही गई है। वही योगज भक्ति में मनुष्य को प्राणायम एवं ध्यान के द्वारा इन्द्रियों पर नियंत्रण स्थापित करने को कहा गया है। ताकि इंसान लालच एवं लोभ का त्याग कर, पर्यावरण के तत्वों का सदुपयोग करे।

पदम पुराण भगवान विष्णु से संबंधित पुराण है, इसलिए पर्यावरण में मौजूद प्रत्येक जैविक एवं अजैविक कारकों को भगवान विष्णु का स्वरूप अथवा अंश बताकर उसके संरक्षण एवं संवर्धन की बात कही गई है। इस पुराण में कई प्रकार के पेड़- पौधे (जैसे- तुलसी, आँवला,पीपल, बरगद, पाकर, गुलाब, बिल्व आदि) को लगाने की बात कही है साथ ही वृक्षारोपण को उत्सव रूप में मनाने की बात भी बताई गई है। पदम पुराण में प्रदुषण (वायु, जल एवं स्थल की भौतिक, रासायनिक तथा जैविक विशेषताओं में अवांछनीय परिवर्तन, जो मनुष्यों, जन्तुओ, पेड़ पौधों एवं अन्य जीवधारियों के लिये आवश्यक तत्वों को नुकसान पहुँचाता है) जैसी किसी समस्या के विषय मे कोई जानकारी प्राप्त होती है। किंतु नदियों, तालाबों, सड़कों, बगीचों आदि को गंदगी मुक्त रखने की बात कही गई है साथ ही धूप एवं यज्ञों के माध्यम से वायु को शुद्ध रखने की बात की गई है।

इस पुराण में शिकार जैसी अनैतिक गतिविधियों को साहसिक प्रदर्शन के रूप में समर्थन दिया गया है। किंतु प्राचीन भारतीय इतिहास में पर्यावरणीय विमर्श को बताने वाले इस ऐतिहासिक ग्रंथ के द्वारा किये गए पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के उच्च स्तरीय प्रयास को अनदेखा नही किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. गोयन्दका जय दयाल (1986) संक्षिप्त पदमपुराण (12वाँ संस्करण) गोरखपुर, गोविंदभवन कार्यालय, गीताप्रेस।।
2. द्विवेदी शिवप्रसाद (2015) श्रीपद्ममहापुराणम् (1-7 भाग), वाराणसी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन ।
3. द्विवेदी कपिलदेव(2000) वेदों में विज्ञान, भदोही, विश्व भारती अनुसंधान परिषद् ।
4. परौहा तुलसीदास (2016-17) इतिहास पुरणों का परिचय, चित्रकूट, महात्मागांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय ।
5. राणा, प्रशांत(2023) पुराणों में पर्यावरण दर्शन, शोध मंथन Vol XIV जून-अप्रैल ।
6. शर्मा उमाशंकर(1998), संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाराणसी, चौखम्बा भारती अकादमी।
7. माली बनवारी लाल (2023) सिन्धु घाटी सभ्यता के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण, International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (अक्टूबर- दिसम्बर)।
8. धीमान अनिल कुमार (2003-2004), लोक साहित्य में पर्यावरण चेतना, रुड़की, राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्था।
9. सिंह आशुतोष कुमार (2003), पुराणों में पयविरण चिंतन लेख (मार्च) ।
10. दुबे अशोक कुमार एवं द्विवेदी सान्त्वना (2018), महाभारत में पर्यावरण संरक्षण, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च ।
11. पाल विजय कुमार एवं गुँसाई एम. एस. (2017), प्राचीन भारतीय धर्मग्रंथो में पर्यावरण एक ऐतिहासिक अध्ययन International Journal of Humanities and Social Science Research (February)।

12. वासिनी शिखर (2020), वेदों में वर्णित पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित विचार International Journal of Applied Research ।
13. द्विवेदी ओ.पी. (1993), ह्यूमन रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड द एनवायरनमेंट: ए हिंदू पर्सपेक्टिव आर्टिकल, जर्नल ऑफ हिन्दू-क्रिश्चयन स्टडीज ।